

राजभाषा मासिक ई-पत्रिका

महिला दिवस
विशेषांक

मार्च, 2024 संस्करण



दामोदर घाटी निगम

साम्राज्य से सौराज्य तक



उषा मेहता

उषा मेहता का जन्म 25 मार्च 1920 में हुआ था और वो सुरत के पास के गाँव सरस में रहती थीं। उषा मेहता 5 साल की उम्र से ही महात्मा गांधी

के अहिंसा के मार्ग पर चलने लगी थी और 8 साल की उम्र में 1928 में उन्होंने पहली बार साइमन आयोग के खिलाफ विद्रोह में भाग लिया था।

उषा मेहता ने 14 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक गोपनीय कांग्रेस रेडियो पर अपनी पहली घोषणा की जिसमें वो अंग्रेजी एवं हिंदी दोनों भाषाओं में बुलेटिन खबर बताती थीं। उनका कार्यक्रम “हिंदुस्तान हमारा” गाने से शुरू होता था और “वंदे मातरम” से समाप्त होता था। उषा मेहता ने ब्रिटिश सरकार से खुफिया रहने के लिए भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान करीब 7-8 रेडियो स्टेशन बदले पर 12 नवम्बर 1942 को उषा मेहता को एक रेडियो कार्यक्रम करते समय गिरफ्तार कर लिया गया जिसमें उन्हें 4 साल की जेल हुई। उषा मेहता ने अपनी जिंदगी भारत के नाम कर डी और 80 साल की उम्र में 11 अगस्त 2000 को उन्होंने अपनी अंतिम विदाई दी।

इस माह के चयनित साहित्यकार



महादेवी वर्मा

हिंदी साहित्य के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक माने जाने वाली महादेवी वर्मा हैं। इन्होंने हिंदी कविताओं में खड़ी बोली का कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल ब्रजभाषा में ही संभव मानी जाती थी।

महादेवी वर्मा जी का जन्म 26 मार्च 1907 में फर्रुखाबाद, उत्तरप्रदेश में हुआ था। इनके जन्म के दिन भाग्यवश होली का पावन त्यौहार भी था। इनके पिता जी का नाम श्री गोविन्द प्रकाश वर्मा था जो भागलपुर गाँव के एक कॉलेज में प्रधानाध्यापक थे। जब वे केवल 7 वर्ष की थी तभी उन्होंने कविता लिखनी प्रारम्भ कर दी थी। आठवीं कक्षा के उपरांत उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत कर दी थी और 12वीं कक्षा पास करने तक वे एक कवयित्री के रूप में विख्यात हो चुकी थी। जिसके बाद विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा। एम.ए. करने तक उनके 2 काव्य संग्रह (नीहार, रश्मि) भी प्रकाशित हो चुके थे।

काव्य संग्रह- नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा
रेखाचित्र संस्मरण-अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार
निबंध संग्रह - श्रृंखला की कड़ियाँ, विवेचनात्मक गद्य, साहित्यकार की आस्था एवं अन्य निबंध, संकल्पिता, श्रणदा
बाल साहित्य - ठाकुर जी भोले हैं, आज खरीदेगे हम ज्वाला

महिला दिवस

आठ मार्च को महा शिवरात्रि पड़ा है यह तिथि,
मना रहे है महिला दिवस सात मार्च की तिथि,
सभी महिलाओं के बीच बैठी महिला मुख्य अतिथि।
एक दूसरे से मिल कर मना रहे महिला दिवस,
एक जुट हो जागरूकता से अंधविश्वासों को कुचल दिया।
हर महिला के उनके अधिकारों को दिला दिया,
मां के कोख में पल रही बेटी,
जब संसार में आती है।
नन्ही गुलाबी, हथेलियों के उंगलियों से,
मां के आंचल को पकड़ती।
एकटक देख मिल-मिलाती आंखों से,
कभी खोलती कभी बंद करती।
गोद से गिरने ना दे मां,
मुट्ठी से आंचल को जकड़ी।
प्रसव के थकान से बावजूद भी,
बेटी को देख मां मंद मंद मुस्काती है।
मां भी पूरी ताकत से,
थामी थी अपनी बेटी को।
गिरने ना दूं मैं कभी तुझे,
बैसाखी बन कर रहूंगी मैं।
देखो दुनिया वालो ने मैंने भी महिला की,
कड़ी में एक महिला को जोड़ दिया।
समयानुसार पलते हुए घर परिवार,
समाज देश विदेश में यह बेटी,
खुद को सशक्त बनाती है।
शिक्षा पा कर बेटी ने तब,
ऊंचे पद को पाती है।

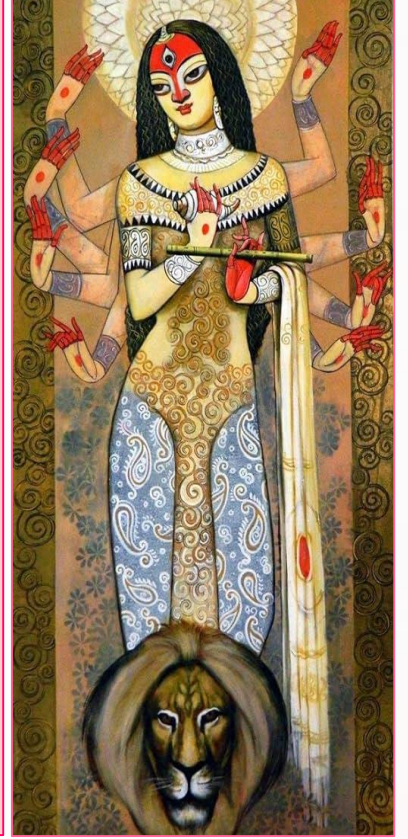


श्रीमती नीलम देवी
स्त्री: श्री लालन प्रसाद गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक(वित्त), चंद्रपुरा

आर्मी, पायलट, नेता, वैज्ञानिक, व्यापार, शिक्षा, खेल, संगीत, आदि में खूब नाम कमाती है।
डॉक्टर इंजिनियर ऑफिसर हर घाटी में आसीन हुए,
तभी तो हमारे डीवीसी में महिला कर्मचारी खूब दिखे।
बढ़ते समाज में लोगों ने,
पर्दा प्रथा और दहेज प्रथा को कुचल दिया।
जागरूक हो कर तभी तो महिला ने,
जीवन में आगे चल दिया।
मिला साथ जब पुरुषों का तब,
महिला को हिम्मत मिली।
गांव बस्ती की महिलाओं में
अंधविश्वास को हटाना है,
परिवार नियोजन के विषयों को भी समझना है।
तभी तो उनके अधिकारों को,
मिल कर हमे दिलाना है।
हर महिला को जीने की रोशनी मिले,
आगे आगे बढ़ाना है।
महिला दिवस सफल हो,
मिल जुल कर हमे मनाना है।

कौन हूं मैं

कौन हूं मैं, कौन हूं मैं,
मैं एक नारी हूं, मैं सृष्टि का आधार हूं
और हर घर का श्रृंगार हूं
मैं वह नारी हूं जो सारे संसार को
बदलने की ताकत रखती हूँ
दुनिया लाख बंदिशे लगाए
उन बंदिशों को तोड़कर
आगे बढ़ने की जुनून रखती हूँ
मैं कभी बहन, तो कभी बेटी,
तो कभी मां बनकर सारे
परिवार को समभालने का धैर्य रखती हूँ
जरूरत पड़े तो हाथ में तलवार लेकर
मां काली का रूप धारण कर
दुश्मनों से लड़ने का साहस रखती हूँ
मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ ...



पेन्सिल स्केच



सुश्री वैभवश्री चौरडिया

सुपुत्री: श्री शुभकरण चौरडिया
वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत), डीवीसी,
कोलकाता



मनेर मानिक

श्रीमती मिनती दत्ता
सतर्कता विभाग



अपु तूमि केमन आछे ?
मन ये जानते चाय।
दिदि ठाकरून सृतिर पाताय
समय हारिये याय ॥
यदिओ,
तारिख मेने आसे ये दुर्गा
तारिख मेने याय ।
मुठोय चापा समयेर बालि
मुचकि मुचकि चाय ॥
परे आछे पेन, बाद्यबन्ध
परे आछे क्लापस्टिक ।
अपेम्फाय आजो दाँडिये इजेल
अपु फिरवे हयतो ठिक ॥
खोला क्यानभ्यासे आलोer बलक
कখনो फेलु कখনो नायक ।
शुन्य स्थान भरवे कि आर,
निदारून हाहाकार ।
गुपी बाघा आर जटायुते मजे
मशगुल आजओ, गल्लेर खोजे ।
परे आछे आरओ कत-कि ना-जानि
लेखनीर भान्धार ॥
एकश पेरिये तिनटि बछर
समयेर चाका हयना निखर ।
आलो आँधारि रङ्गमण्ठे
सृष्टि र जादुकर ।
महारजा, ओगो तोमारे सेलाम
जगत मावे नाईवा पेलाम
अन्तरे तब विविध मानिक
तूमिई सृष्टिकर ॥



श्रीमती प्रेमलता सिंह,
पत्नि-श्री अनिल कुमार
सिंह, उप प्रबंधक
(राजभाषा), कोलकाता

जीवन

ऐ जिंदगी, मुझे अभी तुझे और देखना है,
धीरे-धीरे समय को सरकते देखा, हर साल
खुद को बदलते देखा,
देखे थे कुछ सपने अपने लिए, अब अपने
बच्चों में सपनों की तामीर को पूरा करते
देखना है,
जीवनसाथी का साथ निभाकर, रिश्तों को
मजबूती से निभाना सीखा,
बहुत कुछ सीखा ऐ जिंदगी, अभी कुछ और
सीखना बाकी है
जीवन की आपाधापी में लोगों को रंग
बदलते देखा,
कभी समय को अपनी ओर खींचते देखा,
कभी अपने आप को समय की ओर खींचते
देखा,
अभी पूरी नहीं हुई है जिम्मेदारी, कठिन
तपस्या अभी जारी है,
ना जाने कितने दिन, महीने और साल बचे
हैं,
मगर कुछ सपने तो मेरे अब भी बचे हुए
हैं।
सुख-दुख के इस जीवन में, निज सपने
को पूरा करना है,
उलझन के जाले साफ कर, खुद को फिर
से गढ़ना है
जो भी हो, जैसा भी हो,
फिक्र क्यूँ करना है, फकीरों सी मस्ती में
रहना है,
मुट्ठी से फिसलती रेत में, वक़्त को क्षण
भर रोककर
पूरी शिद्वत से जीवन को जीना है,
ऐ जिंदगी, मुझे अभी तुझे और देखना है !

ओडिसा के पारंपरिक साड़ियों के कई रंग



शाश्वती महापात्र
सूचना व जनसम्पर्क अनुभाग
दामोदर घाटी निगम, कोलकाता

ओडिसा, भारत के पूर्वी तट पर, बंगाल की खाड़ी के किनारे में स्थित है। ओडिसा अपने ऐतिहासिक स्मारकों, पुरातात्विक स्थलों, पारंपरिक कलाओं, मूर्तिकला, नृत्य और संगीत के लिए जाना जाता है। ओडिसा की पारंपरिक पोशाकें उड़िया लोगो की संस्कृति को दर्शाती हैं।

भारत में सभी संस्कृतियों की महिलाओं को साड़ी पहनना पसंद है। लेकिन विभिन्न संस्कृतियों में साड़ी पहनने की पद्धति भी अलग-अलग होती है और उसमें एक पकड़ होती है। ओडिसा की महिलाओं की पारंपरिक पोशाक के लिए भी यह लागू होता है।

ओडिसा में कपड़ा और बुनाई कला का एक बृहत इतिहास रहा है। कपड़ा बुनाई वास्तव में राज्य में एक प्रमुख व्यवसाय है, जिससे हजारों बुनकरों और सम्बद्ध कारीगरों को रोजगार मिलता है। राज्य की स्वदेशी कपड़े की रंगाई और बुनाई के तरीके पुराने धार्मिक लेखों और अनुष्ठानों से प्रेरित थे। ओडिसा की साड़ियों पर हिन्दू पवित्र लेखों, विशेष रूप से कृष्ण पर केन्द्रित लेखों का भारी प्रभाव पड़ा है।

ओडिसा इकत एक ऐसी प्रकार की इकत है जिसे बंधकला और बंध के नाम से जाना जाता है। यह अपनी नक्शों के कारण देश के बाकी हिस्सों में बुने गए किसी भी अन्य इकत से भिन्न है। यह नक्शे केवल ओडिसा के पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में प्रचलन में है। इस कपड़े से बनी साड़ियों के किनारों और सिरों पर ब्रोक्रेड के बैड होते हैं जिन्हें आँचल या पल्लू कहा जाता है। ओडिसा में विभिन्न प्रकार की बंधा साड़ियाँ बनायी जाती हैं। विशेष रूप से खण्डुया, संबलपुरी, पसापाली, कटकी और मणिबंधि आदि। पश्चिम ओडिसा में यह बरपालि, रेमुंडा, सोनपुर, बारगढ़ आदि में बुना जाता है। कटक जिले में यह बड़म्बा, नुआपटना, मानियाबंध, नरशिगपुर में बनाया जाता है।

संबलपुरी, इकत ओडिसा की सबसे लोकप्रिय साड़ी बंधकला और टाई-टाई नामक तकनीकी का उपयोग करके बनायी जाती है। संबलपुरी इकत को कपास और रेशम दोनों में बुनने के लिए डबल इकत विधि का उपयोग किया जाता है। इस कपड़े में राख, फूल, चक्र और रुद्राक्ष जैसे सुंदर प्रकृति प्रेरित नक्शे शामिल होते हैं। यह कार्य जटिल होने के साथ-साथ महंगा भी है। संबलपुरी इकत का कपास संस्करण भी लोकप्रिय है।

इस कपड़े में राख, फूल, चक्र और रुद्राक्ष जैसे सुंदर प्रकृति प्रेरित नक्शे शामिल होते हैं। यह कार्य जटिल होने के साथ-साथ महंगा भी है। संबलपुरी इकत का कपास संस्करण भी लोकप्रिय है।



नुआपटना साड़ियाँ मुख्य रूप से मुलायम रेशम और तसर से बनी होती हैं। नुआपटना में बुनकर महाकाव्य गीत गोविंदा के गीतों के साथ विशेष रेशम बनाते हैं। प्रभू जगन्नाथ मंदिर में मूर्तियों को इस विशिष्ट कपड़े से सजाया जाता है। भगवान कृष्ण के महान प्रभाव के कारण साड़ियाँ प्रभू जगन्नाथ से जुड़े

पारंपरिक रंगों और अन्य पौराणिक विषयों को प्रदीप्ति करती हैं।

बोमकाई साड़ी का रूपांकन आमतौर पर प्रकृति आधारित होते हैं और जनजातीय कला से प्रभावित होते हैं। इसमें पल्लव और बार्डर पर रेशम या रेशम धागे की कढ़ाई के साथ इकत बुनाई का मिश्रण होता है और इसे अक्सर मुलायम रेशम में बनाया जाता है। बोमकाई सूती साड़ियाँ बुनकरों द्वारा बनाई जाती हैं जो आदिवासी कला से प्रेरित हैं।

पसापल्ली साड़ी ओडिसा के बारगढ़ में बुनी गयी एक इकत सारी हैं। चेकरबोर्ड ने साड़ी के पैटर्न और बुनाई को प्रभावित किया है। रंग गहरें और चमकीले होते हैं। साड़ी डबल इकत से बनी है, जो एक चेकरबोर्ड पैटर्न बनती है।

खण्डुया साड़ी ओडिसा की सबसे जटिल इकत साड़ियों में से एक है। इन साड़ियों जो आमतौर पर मुलायम रेशम या मालदा रेशम से बनी होती हैं, उनके चारों ओर अत्याधिक विस्तृत नक्शे होते हैं। सीमा को आमतौर पर एक साधारण मंदिर इकत पैटर्न या एक बहुत ही बुनियादी इकत पैटर्न से सजाया जाता है। पल्लव में जटिल कार्य होता है, जिसे पूरा करने में काफी समय लगता है, यह साड़ियाँ पारंपरिक रूप से लाल, पीले और नारंगी रंगों में बनाई जाती हैं।

बरहामपुरी साड़ी विशिष्ट ओडिसी बुनाई शैली के साथ-साथ कुम्भ या मंदिर पैटर्न के लिए जाने वाली मजबूत रेशम से बनी होती है। नक्शा विशेष रूप से विस्तृत नहीं है और साड़िया आमतौर पर इकत- शैली के मंदिर बार्डर के साथ बुनी जाती हैं।

पारंपरिक प्रक्रिया से बनी साड़िया महिलाओं के वेषभूषा और सौन्दर्य को वृद्धि करने में प्रमुख भूमिका निभाता है और भारतीय संस्कृति को उजागर करता है।

महिलाओं के लिए अत्यंत उपकारी योगासन

योग एक प्राचीन भारतीय प्रथा है जो शारीरिक मुद्राओं, श्वसन विधियों और ध्यान को जोड़ती है। नियमित योगाभ्यास हमारे समग्र स्वास्थ्य, शक्ति को बढ़ाता है और हमारे मन को शांत करने में मदद करता है। आधुनिक समय में महिलाएं अपने करियर और परिवार दोनों की जिम्मेदारी उठा रही हैं, इसलिए, जीवन के सभी पहलुओं को संतुलित करने में सक्षम होने के लिए और अपने उपर कार्य का अधिक बोझ होने पर भी शांत रहने के लिए योगाभ्यास आवश्यक हो जाता है।



देवयानी मल्लिक
कार्यपालक (राजभाषा),
डीवीसी, कोलकाता



परिवार और घर का प्रबंधन करते समय, महिलाएं अक्सर अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा करती हैं जिससे उन्हें मानसिक और शारीरिक समस्याएं, जीवनशैली से जुड़ी समस्याएं और पीसीओएस जैसे हार्मोनल डिसऑर्डर, थायराइड डिसऑर्डर, मोटापा, तनाव और एंग्जाइटी हो सकती है।

मन, शरीर और आत्मा के संतुलन को बनाए रखने के लिए योगाभ्यास करना आवश्यक है। यह जीवन के सभी पहलुओं में संतुलन लाने में मदद करता है। स्वस्थ तन और मन से व्यक्ति अपना और परिवार का भी अच्छे से ख्याल रख सकता है।

कुछ ऐसे योगासन जिनकी मदद से महिलाएं अपनी बढ़ती उम्र में भी खुद को बिल्कुल फिट रख सकती हैं:

भुजंगासन

यह आसन बढ़ती उम्र की महिलाओं के लिए अत्यंत उपकारी है। यह ना केवल आपके शरीर के उपरी हिस्से में खिंचाव महसूस कराता है बल्कि इससे चेहरे पर चमक भी आती है।

धनुरासन

इस आसन को करने से मोटापा तो कम होता ही है साथ ही आपकी शरीर की मुद्राएं भी सही होती है। यह आपके सम्पूर्ण शरीर को अच्छे से स्ट्रेच करने का काम करती है।

तितली आसन

इस आसन को करने से पीरियड्स तो रेगुलर रहते ही हैं साथ ही यह आपके जांघों और पैरों की मांसपेशियों को मजबूत बनाने का काम करती है।

चक्की चालनासन

इस आसन को करने से गर्भाशय, अंडाशय, किडनी के साथ शरीर के कई हिस्सों को मजबूती मिलती है।

बालासन

इस आसन को करने से पूरे शरीर में स्ट्रेच होती है, जिससे की दर्द में आराम महसूस होता है साथ ही यह किसी भी प्राकर के स्ट्रेस को दूर करने में मदद करती है।

उत्काटसन

कमर, नितंब और जांघ के लिए यह योग बहुत ही लाभदायक है। इससे पैरों में मजबूती मिलती है साथ ही इन्हें अच्छे आकार में लाने में मदद मिलती है।

सेतुबंधासन

यह आसन शरीर के नीचले हिस्से को मजबूत बनाने में मदद करता है। इससे आपके कमर और नितंब के दर्द में भी आराम मिलता है।

इनके अलावा, ऐसे कई आसन हैं जो माइग्रेन, थायराइड और पीठ दर्द के लक्षणों को कम करने में मदद करते हैं, जो एक सामान्य बीमारी है जिससे सभी उम्र की महिलाएं पीड़ित होती हैं। माइग्रेन के लिए सुझाए गए आसन अधोमुखासवन आसन (नीचे की ओर चेहरा कर कुर्ते की मुद्रा) और प्रसरितापद्मोत्तन आसन (पैर को चौड़ा करके आगे की ओर झुकना) हैं।

पर्याप्त नींद के बिना, कोई भी व्यक्ति अपने उच्चतम स्तर पर कार्य नहीं कर सकता है, और सिद्धासन, विपरीत करिणी और सुप्तार्ध दंडासन जैसे योग हमारे नींद चक्र, नींद की गुणवत्ता और अनिद्रा को दूर करने में मदद करते हैं।

महिलाओं को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हालांकि यहां योग के महत्व पर सलाह दी गई है, लेकिन योग अभ्यास एक प्रोफेशनल के मार्गदर्शन में ही किया जाना चाहिए। एक प्रमाणित प्रशिक्षक से योग कक्षाएं लेना सबसे अच्छा है जो आपको सही आसन और उचित तकनीक सिखाता है।

स्वाभिमान

तोड़ दो वो लौह बेड़ियां
जो बढने से तुझको हैं रोकती
संस्कारों की दे दुहाई हर बात पर
सबको रहती हैं टोकतीं
तजके अपना स्वाभिमान कब तलक
यूँ ही घुटती जाओगी
सबको खुश करने की चाहत
पूरी कभी भी न कर पाओगी
जीना सीखो अपने दम पर
ये तेरा भी तो अधिकार है
दासता का जीवन जीना पड़े
तो ऐसा जीवन धिक्कार है
कर चुकी अपने सपनों का
दूसरों के खातिर बलिदान तुम
दूसरों से भी है मान मिलता
जब खुद को दोगी सम्मान तुम
#मनु नहीं कहती कभी बगावत का जरूरी है शंख नाद
पर तेरा अधिकार छीने तो चुप ना बैठ उठा अपनी आवाज़ ॥



श्रीमती मनोरमा झा
शिक्षिका -अर्थशास्त्र ,
डी. वी.सी.+2 उच्च
विद्यालय मैथन

मेरी चाहत

नहीं चाहिए देवी का कोई आसन
मुझको बस इंसान ही रहना है
घोंट कर दिल में अपनी चाहतों को
व्यर्थ ही असह्य दुख ना सहना है
सोचने की है समझ संग ज्ञान भी
खुल के मन की बातें भी कहना है
हूँ दया, प्रेम और ममता की मैं मूरत
तो लाज मेरा अनमोल एक गहना है
है मेरा स्वाभिमान दिल में हिलोरे मारता
ये नहीं दर्प मेरा जो जरूरी ढुहना है
कोमल भले तन से,मन से हूँ फौलाद सी
मोम की गुड़िया नहीं जो इस डहना है
कोख से मेरी ही सृष्टि भी है फूटती
बस नदी सी बन सींचने को बहना है



खुशबू कुमारी
छात्रा,वर्ग -दशम ,डी.वी.सी.+2
विद्यालय, मैथन

सीएसआर गतिविधियाँ

“यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं। लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप एक राष्ट्र को शिक्षित करते हैं।”

स्थानीय लोगों के बीच शिक्षा की अलख जगाने में डीवीसी का सदैव योगदान रहा है। डीवीसी ने हमेशा समाज की जरूरतों को पूरा किया है और विशेष रूप से स्कूलों के माध्यम से बालिका शिक्षा को बढ़ावा दिया है। निगम अपनी विभिन्न परियोजनाओं पर स्थित 15 डीवीसी स्कूल चलाता है जहां 4230 स्थानीय छात्राएं मुफ्त शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।



डीवीसी स्कूल की कुछ अनुकरणीय उपलब्धि

डीवीसी +2 हाई स्कूल, चंद्रपुरा (बोकारो) की छात्रा सुश्री निक्की कुमारी वर्ष 2022 में +2 (वाणिज्य) में झारखंड राज्य में टॉपर रहीं।



सीएसआर गतिविधियाँ

आमार नाम गीता मित्र। आमार स्वामीर नाम गौतम मित्र। आमाि एखनओ यौथ परिवारेर मध्ये बसवास करि। आमार परिवारेर उपार्जन स्वच्छल ना थाकाय निजस्व उद्योगे CSR सेलाई ट्रेनिंग सेन्टारे भर्ति हई 2022-23। ट्रेनिंग सेन्टारे ये सब जिनिष शेखानो हय , सब गुलोई ठिक आयतु करते पेरेछि। दिदिर अनुप्रेरणाय आमाि निजस्व घरे मेशिन निये काज शुरु करि। आज आमाि मोटामुटि किछुटा हलेओ परिवारके आर्थिक भावे साहाय्य करते पारछि एवं आमार छेलेर लेखा पड़ातेओ किछुटा सहयोगिता करते पारछि।



गीता मित्र
ग्राम: अर्जुनपुर



बीटीपीएस की स्थानीय लड़कियों के लिए कंप्यूटर साक्षरता कार्यक्रम



महिलाओं के लिए दीया और अगरबती बनाने का प्रशिक्षण (मैथन)



महिलाओं के लिए सिलाई प्रशिक्षण (कोनार)



महिला फुटबॉल टूर्नामेंट(डीएसटीपीएस)



महिलाओं को सुरक्षित पेयजल सुविधा का लाभ (डीएसटीपीएस)



परिवार कल्याण शिविर का आयोजन (एमटीपीएस)

महिलाओं के 11 अधिकार-आइए जाने

भारतीय कानून में महिलाओं को 11 अलग-अलग अधिकार मिले हैं। इनमें अहम हैं दफ्तर में यौन उत्पीड़न के खिलाफ सुरक्षा का अधिकार, किसी घटना की स्थिति में जीरो एफआईआर दर्ज करने का अधिकार और बराबर वेतन पाने का अधिकार आदि। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं। भारत सरकार ने महिलाओं को कई अधिकार दिए हैं। लैंगिक समानता हो या नौकरी-चाकरी में पुरुषों के बराबर की हिस्सेदारी, गरिमा और शालीनता से जीने का अधिकार हो या ऑफिस-दफ्तर में उत्पीड़न से सुरक्षा, महिलाओं से जुड़े ऐसे कई अधिकार हैं जिनके बारे में हमें जरूर जानना चाहिए। भारत में लैंगिक समानता के आधार पर महिलाओं को मिले 11 अधिकारों के बारे में हम जानकारी लेंगे। आइए जानते हैं कि ये अधिकार कौन-कौन से हैं।



श्री रंजीत कुमार चौबे
वरिष्ठ प्रबंधक (संरक्षा)
एवं संरक्षा प्रमुख
सी टी पी एस, डिवीसी,
चंद्रपुरा

1-समान मेहनताना का अधिकार

इक्वल रिम्यूनरेशन एक्ट में दर्ज प्रावधानों के मुताबिक जब सैलरी, पे या मेहनताने की बात हो तो जेंडर के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकते। किसी कामकाजी महिला को पुरुष की बराबरी में सैलरी लेने का अधिकार है।

2-गरिमा और शालीनता का अधिकार

महिला को गरिमा और शालीनता से जीने का अधिकार मिला है। किसी मामले में अगर महिला आरोपी है, उसके साथ कोई मेडिकल परीक्षण हो रहा है तो यह काम किसी दूसरी महिला की मौजूदगी में ही होना चाहिए

3-दफ्तर या कार्यस्थल पर उत्पीड़न से सुरक्षा

भारतीय कानून के मुताबिक अगर किसी महिला के खिलाफ दफ्तर में या कार्यस्थल पर शारीरिक उत्पीड़न या यौन उत्पीड़न होता है, तो उसे शिकायत दर्ज करने का अधिकार है। इस कानून के तहत, महिला 3 महीने की अवधि के भीतर ब्रांच ऑफिस में इंटरनल कंप्लेंट कमेटी (ICC) को लिखित शिकायत दे सकती है।

4-घरेलू हिंसा के खिलाफ अधिकार

भारतीय संविधान की धारा 498 के अंतर्गत पत्नी, महिला लिव-इन पार्टनर या किसी घर में रहने वाली महिला को घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने का अधिकार मिला है।

लिव इन पार्टनर या रिश्तेदार अपने परिवार के महिलाओं के खिलाफ जुबानी, आर्थिक, जज्बाती या यौन हिंसा नहीं कर सकते। आरोपी को 3 साल गैर-जमानती कारावास की सजा हो सकती है या जुर्माना भरना पड़ सकता है।

5-पहचान जाहिर नहीं करने का अधिकार

किसी महिला की निजता की सुरक्षा का अधिकार हमारे कानून में दर्ज है। अगर कोई महिला यौन उत्पीड़न का शिकार हुई है तो वह अकेले डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के सामने बयान दर्ज करा सकती है। किसी महिला पुलिस अधिकारी की मौजूदगी में बयान दे सकती है।

6-मुफ्त कानूनी मदद का अधिकार

लीगल सर्विसेज अथॉरिटीज एक्ट के मुताबिक बलात्कार की शिकार महिला को मुफ्त कानूनी सलाह पाने का अधिकार है। लीगल सर्विस अथॉरिटी की तरफ से किसी महिला का इंतजाम किया जाता है।

7-रात में महिला को नहीं कर सकते गिरफ्तार

किसी महिला आरोपी को सूर्यास्त के बाद या सूर्योदय से पहले गिरफ्तार नहीं कर सकते। अपवाद में फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट के आदेश को रखा गया है। कानून यह भी कहता है कि किसी से अगर उसके घर में पूछताछ कर रहे हैं तो यह काम महिला कांस्टेबल या परिवार के सदस्यों की मौजूदगी में होना चाहिए।

8-वर्चुअल शिकायत दर्ज करने का अधिकार

कोई भी महिला वर्चुअल तरीके से अपनी शिकायत दर्ज कर सकती है। इसमें वह ईमेल का सहारा ले सकती है। महिला चाहे तो रजिस्टर्ड पोस्टल एड्रेस के साथ पुलिस थाने में चिट्ठी के जरिये अपनी शिकायत भेज सकती है। इसके बाद एसएचओ महिला के घर पर किसी कांस्टेबल को भेजेगा जो बयान दर्ज करेगा।

9-अशोभनीय भाषा का नहीं कर सकते इस्तेमाल

किसी महिला (उसके रूप या शरीर के किसी अंग) को किसी भी तरह से अशोभनीय, अपमानजनक, या सार्वजनिक नैतिकता या नैतिकता को भ्रष्ट करने वाले रूप में प्रदर्शित नहीं कर सकते। ऐसा करना एक दंडनीय अपराध है।

10-महिला का पीछा नहीं कर सकते

आईपीसी की धारा 354D के तहत वैसे किसी भी व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कार्रवाई होगी जो किसी महिला का पीछे करे, बार-बार मना करने के बावजूद संपर्क करने की कोशिश करे या किसी भी इलेक्ट्रॉनिक कम्युनिकेशन जैसे इंटरनेट, ईमेल के जरिये मॉनिटर करने की कोशिश करे।

11-जीरो एफआईआर का अधिकार

किसी महिला के खिलाफ अगर अधिकार होता है तो वह किसी भी थाने में या कहीं से भी एफआईआर दर्ज करा सकती है। इसके लिए जरूरी नहीं कि कम्प्लेंट उसी थाने में दर्ज हो जहां घटना हुई है। जीरो एफआईआर को बाद में उस थाने में भेज दिया जाएगा जहां अपराध हुआ हो।

नारी की बदलती तस्वीर

नारी, जीवन की लिखती नव गीत है
सांस्कृतिक मूल्यों की नई रीत है
विघ्न-बाधाओं के सामने खड़ी भीत है
राह-ए-जिंदगी की ऊर्जावान मीत है ।

नारी, मरुभूमि में शीतल सी नीर है
हथेली पे खींचती भाग्य की लकीर है
कुरीतियों के झूरमूठ को चीरती
शमशीर है

जिगर में रखती निश्चय दृढ़ है, वह तो
लक्ष्यभेदी तीर है ।

आज की नारी त्रेता-युग की सीता
नहीं, जो..

धधकती आग में अपनी पवित्रता का
इम्तिहान दे,

ना वो गुप्त के कलम की नारी है, जो
सिर्फ...

आँचल में दूध और आँखों में रखती
पानी है।

वह तो प्रसाद की श्रद्धा की प्रतिबिंब
को छूती,



श्री अभिरंजन कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिकी),
केटीपीएस

रूढ़ियों पर हथौड़ों से प्रहार
करती निराला की नारी है ।

नारी, सरहदों पे दुश्मनों से लोहा
लेती फौज है
संग है तो बोझिल जिंदगी में
मौज है ।

नारी, आत्मजाओं में चेतना की
नई लौ है,
मानवी गरिमा की गौरव गाथा
की नई पौ है ।

तुम माँ हो

श्री विजय महापात्र, सेवानिवृत्त
अभियंता
पिता: श्रीमती शास्वती महापात्र,
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग

बिन्नी मौसी !

ॐ

तुम हर दिन मुझे स्कूल ले जाती और घर लाती हो । लेकिन मेरी माँ कभी साथ नहीं देती ।

वे तो नौकरी करती हैं

पिंकी, रोजी दाना की माताएँ तो उनको ले जाती और वापस लाती हैं ।

वे नौकरी नहीं करती ।

मेरी सहेलियाँ उफास करती हैं, कहती हैं मौसी कभी माँ बन सकती हैं?

वे सत्या कहती हैं । मैं एक आया हूँ, मौसी तक नहीं। बहुत गरीब हूँ । मैं तुम्हारी माँ कैसे हो सकती हूँ?

अगर माँ मुझसे सचमुच प्यार करती तो नौकरी छोड़ देती ।

माँ ने जब पढाई की है तो नौकरी क्यों नहीं करेगी?

जिस तरह मेरे मित्रों की माताएँ जो करती हैं मुझे पढाना, स्कूल ले जाना, फिर वापस लाना, मेरे साथ बैडमिंटन खेलना, वगैरह- वगैरह क्यों नहीं करती?

पढाने के लिए माँ ट्यूटर रखा है न? खाना पकाकर देने के लिए रसोइया हैं न?

क्लब में खेलने के लिए माँ के पास समय है मौसी! पिकनिक और पार्टी में जाने का उनके पास समय है लेकिन इकलौती बेटी के साथ खेलने, दो शब्द बोलने के लिए उनके पास समय नहीं है ।

पिताजी के दर्शन तक नहीं होते क्योंकि ज्यादातर वे दूर में रहते हैं।

जब वे घर आते हैं तो मुझे सोया हुआ पाते हैं । जब मैं जागती हूँ तब वे नहीं मिलते । मिली! ऐसा तुम क्यों सोचती हो । वे तुम्हें बहुत प्यार करते हैं ।

झूठ! उनको व्यापार प्यारा है, पैसा प्यारा है, बेटी प्यारी नहीं। क्यों?

कुछ दिन हुए स्कूल के सालाना जलसे में दूसरे मित्रों के मटा-पिता आए थे, मेरे लिए कोई नहीं। मुझे कितना खराब लगा था। मेरी खुशी से उनको क्या? मैं एकदम अकेली हूँ।

वे लोग बड़े हैं। आदरणीय हैं।

उन्होंने तुम्हें पैदा किया है। उनकी असुविधा को तुम नहीं जान सकती। तुम अभी नादान हो। तुम मुझे समझ सकती हो बिननी मौसी। वे क्यों नहीं समझते। रात में तुम्हीं मुझे छती से लगाकर प्यार से सुलाती हो, मुझे हंसाती हो। मैं जब रोटी हूँ, तुम भी रोटी हो। तब तुम आया नहीं, मेरी माँ हो।

छिः ऐसा मत बोलो।

যে জীবন ফড়িংয়ের

সুশ্রী সিমিতা কুঁড়
সহায়ক প্রबंधক
ईआरपी अनुभाग, डीवीसी, कोलकाता



মাঝে মাঝে নিজের সঙ্গে কথা বলি, হয়তো নিজের মধ্যে তোমায় খুঁজে, তোমার সঙ্গেই বলা।

নিজের যত ঘাত প্রতিঘাত, অভিযোগ, অনুরাগ, সব ফুলের মত সাজিয়ে তোমার পায়ে সমর্পণ। ফুল সাজাতে গিয়ে হয়তো দু চারটে কাঁটাও সাজানো।

সবই তুমি হাসি মুখে গ্রহণ করো, দিনের শেষে আদরে মাথায় হাত রাখো। কিন্তু এত কথা এত স্নেহেও সেই উত্তরটা আমি পাইনা খুঁজে, আমার জীবন যদি হতো ফড়িংয়ের মত, কি ক্ষতি ছিল তাতে?

হয়তো কখনো অলক্ষ্যে কারুর শিকার হতাম, ফুড়াত জীবনের দিন, তবু সারল্যে জড়ানো ছোট্ট জীবন হতো সার্থক।

আজ তুমি আমায় যা দিয়েছো, সবই তোমার। আমার অনুভূতি, প্রেম আর আমার অন্ধকারও।

বুদ্ধির শানিত ছুরি আমায় বাঁচিয়ে রেখেছে, কিন্তু সেকি শুধুই বাঁচিয়েছে? কাটেনি আমায়?

আমার সারল্য গচ্ছিত রেখে সে আমায় রক্ষা করেছে।

তার গভীর প্রেমে আমি হয়েছি দ্বিধাশ্রিত।

এক আমি যে ফড়িংয়ের জীবন আজও বাঁচতে চায়।

আর এক আমি যে সব তীর বুকে নিয়ে, দুহাতে রক্ষা করে সেই ফড়িংটাকে।

उपभोक्ता संरक्षण और क्रेता सावधान रहो

श्री गणेश चन्द्र नायक
वरिष्ठ भंडारपाल,
एमटीपीएस

हमारे देश के अधिकांश उपभोक्ता अशिक्षित हैं तथा उनकी आमदानी निम्न है। वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होते हैं।

उत्पादक और व्यापारी इसका फायदा लेकर उनका अनेक प्रकार से शोषण करते हैं। आज के दिन अखबार, रेडियो, टेलीविजन आदि प्रचार एवं विज्ञापन के कई साधन उपलब्ध हैं। उत्पादक इस पर अत्याधिक धन खर्च करते हैं जिसका बोझ उपभोक्ताओं को वहन करना पड़ता है। यही वजह है कि देश में उपभोक्ताओं के शोषण को रोकने के लिए “उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम” चालू किया गया है। हमारे देश भारतवर्ष में उपभोक्ताओं का कई प्रकार से शोषण किया जाता है। वस्तुओं की गुणवत्ता, क्षमता या शुद्धता का भूल प्रचार, वस्तुओं की माप-तौल में गड़बड़ी, कालाबाजारी, जमाखोरी, आदि। शोषण के अन्य तकनीक भी हैं। उपभोक्ताओं के अधिकारों की सुरक्षा एवं उनके शोषण को रोकने के लिए भारत सरकार ने सन 1986 में “उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम” जारी किया है। इसे राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय आयोग, राज्य स्तर पर राज्य आयोग तथा जिला स्तर पर जिला अदालत कहा जाता है। इसका मकसद उपभोक्ताओं की परिवेदनाओं को दूर करना है। उपभोक्ता-संरक्षण अधिनियम प्रत्येक प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं के विक्रय पर लागू होता है। इसका मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं के निम्नलिखित अधिकारों की सुरक्षा करना है :-

1. उपभोक्ताओं का अनुचित व्यापारिक व्यवहारों से संरक्षण तथा इसके लिए वस्तुओं की गुणवत्ता, मात्रा, शुद्धता, क्षमा एवं मूल्य के संबंध में जानकारी प्राप्त करने का अधिकार।
2. ऐसी वस्तुओं के विपणन से सुरक्षा जो उपभोक्ताओं के जीवन या संपत्ति के खातिर घातक हो सकती है
3. प्रतिस्पर्धात्मक मूल्यों पर वस्तुओं को प्राप्त करने का अधिकार।
4. उपभोक्ताओं को उचित स्थान पर अपनी शिकायत दर्ज कराने और क्षतिपूर्ति का अधिकार।

अगर किसी वस्तु का मूल्य तथा उपभोक्ताओं को दी जानेवाली क्षतिपूर्ति की राशि पाँच लाख रुपये तक है तब उपभोक्ता इसकी शिकायत जिला अदालत में दर्ज करा सकते हैं। अगर किसी वस्तु का मूल्य तथा क्षतिपूर्ति की राशि पाँच लाख रुपये से अधिक और बीस लाख तक है

तब यह शिकायत राज्य आयोग के पास की जा सकती है । अगर किसी वस्तु का मूल्य एवं क्षतिपूर्ति की राशि बीस लाख रुपये से अधिक होने पर उपभोक्ता राष्ट्रीय आयोग में इसकी शिकायत दर्ज करा सकते हैं ।

उपभोक्ताओं की शिकायत दर्ज करने के लिए कोई शुल्क नहीं देना पड़ता है । इस प्रकार की कोई भी शिकायत व्यक्तिगत रूप से या डाक द्वारा भेजी जा सकती है । उपभोक्तावाद से आशय उपभोक्ता के मौलिक अधिकारों और हितों की सुरक्षा करने तथा उसे शोषण से बचाने हेतु छेड़ा गया आंदोलन। इस आंदोलन से उपभोक्ता माल तथा सेवाओं में सुधार की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं । आधुनिक अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता को व्यावसायिक जगत का केंद्र बिन्दु माना जाता है ।

वस्तु विक्रय अधिनियम 1930 की धारा 2 में कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:

क्रेता: क्रेता से आशय उस व्यक्ति से है जो माल खरीदता है अथवा खरीदने के लिए सहमत होता है ।

विक्रेता : विक्रेता से आशय उस व्यक्ति से है जो माल बेचता है अथवा बेचने के लिए सहमत होता है ।

सुपुर्दगी : सुपुर्दगी से आशय उस व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को स्वेच्छापूर्वक माल के अधिकार का हस्तांतरण करने से है ।

मूल्य: मूल्य से आशय माल की बिक्री की प्रतिफल से है जो सदैव मुद्रा में होना चाहिए ।

“Caveat Emptor” शब्द लेटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है-“क्रेता सावधान रहे। यह सामान्य सिद्धांत की बात है कि क्रेता माल खरीदते समय सावधान रहे यानि वह अपने हितों की, स्वयं की रक्षा करे। क्रेता की सावधानी के सिद्धान्त के अनुसार क्रेता का यह कर्तव्य है कि वह सावधानीपूर्वक अपने विवेक को काम में लेते हुए पर्याप्त जांच करके यथोचित गुण, किस्त व उद्देश्य के लिए ही माल खरीदे । विक्रेता का यह दायित्व नहीं है कि वह क्रेता को माल के दोषों, अवगुणों व विशिष्ट उद्देश्य के लिए अनुपयुक्तता के विषय में बताये जब तक कि यह बताना विक्रय की एक शर्त न हो ।”

अब मुझे एक शायरी याद आ गयी :-

“अपनों ने मुझे लूटा, गैरों में कहाँ डैम था,
मेरी कशती वहाँ डुबी, जहाँ पानी बहुत कम था ॥

सेवा और त्याग की प्रतिमा - नारी

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'

अरी नहीं वह महान रचना है। दिव्य संपर्कों का सुधा है। भक्ति अभिव्यक्ति के साथ शक्ति, मुक्ति तथा आद्य से स्वयं सिद्धा। वह प्रकृति की प्राकृतिक स्वामिनी, सृजन सृष्टि, जीवन सृजनी गरीयसी, शक्तिमयी, अभया, पालिका, सेविका एवं जननी। सबों से आगे, अत्र, तत्र, सर्वत्र, कोणों, अनुकोणों में, दश दिशाओं में महिमा व्याख्यान, सेवा व त्याग परिव्याप्तों में समाहित।



श्री बसंत कुमार महापात्र,
भेषाजज्ञ ग्रे.-1,
डीवीसी अस्पताल,
चंद्रपुरा, झारखंड

होतें हैं नामकरण अनेक नामों में, समय और स्थानों में अनेक प्रकार में अनेक रूपों में, परंतु धर्म सर्वदा स्थिर रहता है। प्रत्येक नामों में सार्थकता, प्रेम-भक्ति का साथी और भी, एक है तन मन, एक है जीवन, प्रतिज्ञा संकल्प वचन । एक हृदय, चिंतन, मंथन, कल्याण जगत हित में । एक दृष्टि, एक आशा और आकांक्षा, समर्पण की भावना मन में।

दायित्वों का संग्रह, कदम दर कदम बदलते जाते हैं। बदलते भी संपर्क की परिभाषाएँ। मन, ध्यान और आशाएं, बदलते जिम्मेदारियां सोपानों में। पुत्री, बन कर, माता-पिता के घर में एक संतान, एक नारी का जनम होता है। किशोरी, युवती, स्वरूपा, शोभिता, भरती है, अनेक आशाएं। माता पिता, परिवार भ्राता, सखी सबों में प्रेम की भाषाएं। जन्मदात्री, वात्सल्यता धारणी, गर्भ में रक्त का सिंचन करती। दस माह दस दिनों में प्रसव, एक मां लेती है जनम। ममताओं के छाया में, आंचल की आवरण में, जीवन की सृष्टि तथा शिशु का स्तन्य पान में, सुधा की धारा देती हैं। शिशु का शरीर वृद्धि चंद्रमा की तरह बढ़ता है। शिशु धीरे-धीरे प्रमुख हो जाता है। सीने पे लगा के संतान को एक क्षण न करती दूर। रात रात भर जागती रहती तथा शिशु के ऊपर नजर भी रखती एक प्रहरी जैसी। शिशु को रखती कुदृष्टि से दूर। झाड़ देती देह के धूल, आंचल से, समझाती, मां की ममता, ममता से। दायित्व निभाती, प्रथमा शिक्षिका बन के। शिशु के मुख में प्रथम वर्णवोध मां की विद्या दान में। परिवार अवश्य शिक्षित हो के सम्मान लाभ करता है। संगिनी प्रेरणा की धाराएँ, सुमधुर कोमल ध्वनि में। सखी भी, अर्धांगिनी भी, मधुर बादिनी, मधुर स्वन के साथ जीवन की गति, मंत्रों में भर देती।

पतन से बचाती पत्नी बनकर, नर का। सुगम पथ ,पतिव्रता पवित्रता के अनुपालन भी सदा सर्वदा अपनी मन में। प्रेरणाएं मनुष्य की समृद्धि में ,हस्तों में मंगल की स्पर्श और भरती रहती उत्साह की पात्र,सारी शुभकामनाओं के साथ।बनाती घरों को मंदिर,एक सूत्र में सबों को रखती।ममताओं के वितरण में दूसरे के मुख में हंसी, है, उसकी अपनी खुशी।मंत्री बनकर, विपत्ति में रक्षा का वादा सर्वदा सहायता ले आती सुमंत्रणा के साथ।दूर होती विघ्न बाधाएं उनकी वर दान में। नदी, कविता, सरिता, कमलिनी, दो कुलों में दुहिता बनती। पिता माता के घर और अपना भी सम्मान की चिंता में लीन रहती। हर एक एक सफलताओं की कामना, एक एक की हित में।सम्पर्क की परिभाषाओं में एक एक पल महान बनते।निर्झारिणी, प्रवाहिनी, उपासिनी, जप, तप, व्रत, उपवास, त्याग, अहिंसा, नम्रता की प्रतीक । भरती रहती शांति का सुवास। अन्नपूर्णा भोजन देती। देती भूख प्यास से मुक्ति। कुटुम्ब के अधर में आधार और निवाला प्रदान कर के दिव्य शांति का प्राप्त करती ।

जल में ,थल में ,नभ में भी हातों में राष्ट्र ध्वज ।एक सैनिक बनके, तैयार रहती वीरांगना बनके देश की रक्षा करती । निस्वार्थता की सफलता, त्याग ,सेवा तथा धर्म का मार्ग है।सलीता बन कर दीपक में जलती। अंधकार को दूर भगाती । कंधे पे कंधा मिलाकर चलती। देश की उन्नति के लिए उन्नति के पथों पर।यकीनन ,सबसे अच्छा योगदान होते हैं और सही असरदार भी ।

किंतु दुःख और शोक से भरी उसकी राह,वह हमेशा अकेले ही लड़ती रहती। कापुरुषता से नहीं डरती। बढ़ती रहती न हार कर । लालच का हमला बढ़ता है। भ्रूण की हत्या उसकी गर्भ में। मानसिक यातनाएं भी सहती रहती एकांत में। अश्रुओं की धारा से धो ती रहती,अपनी राहों को, दे कर अनल परीक्षा। जीवन उसकी पराधीन आज भी। दूसरा इसकी समीक्षा करता करता है। रात तो अभी दूर है। स्पष्ट दिवालोक में भी, अत्याचार, दुराचार की यातनाएं, अपहरण, लूटपाट आक्रमण और अभद्रता का विचार जनम लेते हैं।

वस्तु जैसे व्यवहार की सोच, लाभ क्षति का अंक हिसाब,दहज का दानव निगलता जाता है, उसकी आशाओं को।

अनेक जतन, अनेक साधना, प्रस्फुटित पुष्प जैसी, सेवा की खुशबू होती सुगंधित, सब कुछ उसकी अर्पण में। न दुर्बला न अबला आज,वो।

अपनी मानसिकता बदल लें सब। सम्मान की पात्री है वह। कृपया शुभ दृष्टि दें। मिले सही आसन उन्हें ।

वह स्वनिर्मित है, स्वयं सर्व कारिणी भी है। विद्या, धन, बरदात्री, पूजनीया, अभिनंदिता, से विता, देवताओं के मनों में।

डीवीसी गतिविधियाँ



प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी द्वारा दिनांक 02.03.2024 को कृष्णानगर, नादिया से वर्चुअल माध्यम से रघुनाथपुर थर्मल पावर स्टेशन चरण II (2x660 मेगावाट) का शिलान्यास किया गया

डीवीसी गतिविधियाँ



आरईसी द्वारा दामोदर वैली कॉरपोरेशन (डीवीसी) के साथ उनकी ट्यूबड कोयला खदानों के लिए ₹588 करोड़ के टर्म लोन समझौते, एस्करो समझौते और हाइपोथेकेशन डीड्स पर हस्ताक्षर किए गए।



मुख्यालय, कोलकाता में दिनांक 26.02.2024 को डॉ जॉन मथाई, सदस्य सचिव महोदय की अध्यक्षता में अधिकारियों हेतु एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया

डीवीसी गतिविधियाँ



वर्ष 2024 में वीप्स द्वारा आयोजित 34वां राष्ट्रीय सम्मलेन ने डीवीसी के महिला कार्मिकों ने भाग लिया



डीवीसी महिला क्लब द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

प्रशासनिक शब्दावली

Incumbent	पदधारी	Negotiable	समझौता वार्ता योग्य
Indispensable	अनिवार्य	New Measures	उपाय
Initial	आद्यक्षर	Nominate	नामित करना
Installation	संस्थापना	Non Executive	गैर कार्यपालक
Maintenance	अनुरक्षण	Non Recurring	अनावर्ती
Man days	श्रम दिन	Notification	अधिसूचना
Management	प्रबंधक	Occasional	अनियत
Manifesto	घोषणा-पत्र	Offer	प्रस्ताव रखना
Manpower	जनशक्ति	Officiating	स्थानापन्न
Memorandum	ज्ञापन	On probation	परिवीक्षा
Mileage	मीलदूरी	Over all	समस्त
Milestone	मील पत्थर	Over due	अतिशोध्य
Minutes	कार्यवृत्त	Outgoing	निर्गामी
Miscellaneous	विविध	Panel	नामिका
Misconduct	कदाचार	Par Value	सममूल्य
Modification	संशोधन	Part time	अंशकालिक
Monetary	आर्थिक	Particulars	विवरण

फरवरी, 2024 में सेवानिवृत्त कर्मियों की सूची

क्रम सं	नाम	विभाग	पदनाम	केंद्र
1.	श्री अनिल कुमार	संरक्षा	उप महाप्रबंधक (संरक्षा)	डीएसटीपीएस
2.	श्री तमाल दास	सिविल	सहायक प्रबन्धक (सिविल)	बीटीपीएस
3.	श्री बादल कुमार महली	सीएसआर	कार्यपालक(प्रशासनिक)	सीटीपीएस
4.	श्री सुजीत रॉय	सीएमएम	कार्यपालक(प्रशासनिक)	कोलकाता
5.	श्री समीर कुमार साहू	वित्त एवं लेखा	सहायक प्रबन्धक (वित्त)	कोलकाता
6.	श्री अश्विनी कुमार मिश्रा	सीएमएम	कार्यपालक (भंडार)	बीटीपीएस
7.	श्री सुब्रत घोषाल	वाणिज्यिक	कार्यपालक निदेशक (विद्युत)	कोलकाता
8.	श्री रंग नाथ झा	क्यूसी एंड आई	उप प्रबन्धक (अनुसंधान)	मैथन
9.	श्री श्रीकांत पंडित	व्यावसायिक	वरिष्ठ महाप्रबंधक (वित्त)	कोलकाता
10.	श्री प्रदीप कुमार घोष	सीएमएम	वरिष्ठ प्रबन्धक (विद्युत)	कोलकाता
11.	श्री निमाई कुमार दत्ता	मानव संसाधन	कार्यालय अधीक्षक (पीजी-1)	कोलकाता
12.	शिव कुमार दास	प्रणाली	वरिष्ठ भंडारपाल (पीजी)	संचार (मैथॉन)
13.	श्री कृष्ण कुमार मिश्रा	एफ एंड ई	कार्यालय अधीक्षक पीजी-1।	बीटीपीएस
14.	श्री बासुदेव मंडल	प्रणाली	चार्जहैंड(लाइंस) पीजी	पारेषण (मैथन)
15.	श्रीमती पार्वती पोद्दार	मानव संसाधन	कार्यालय अधीक्षक	कोलकाता
16.	श्री तारन कुमार पांडेय	सीएमएम	वरिष्ठ भंडार पर्यवेक्षण (पीजी)	सीटीपीएस
17.	श्री कल्लोल कुमार कुंडू	ओ एंड एम	सहायक नियंत्रक (यांत्रिकी)	डीटीपीएस
18.	श्री कृष्णदेव ठाकुर	सिविल	सहायक	मैथन
19.	श्री आलोक कुमार सेन	प्रणाली	तकनीकी सहायक	पारेषण(दुर्गापुर)
20.	श्री पिता पुरुषोत्तम	प्रणाली	तकनीकी सहायक	पारेषण (हावड़ा)
21.	श्री नाग नयन गिरि	सिविल	सहायक श्रेणी -1।	मैथन
22.	श्री गोबिंद बोस	सीएमएम	सहायक	कोलकाता
23.	श्री कार्तिक मलिक	ओ एंड एम	कनिष्ठ खलासी	एमटीपीएस
24.	देबाशीष रॉय	सचिवालय	कनिष्ठ संदेशवाहक	कोलकाता

महिलाओं में निवेश: प्रगति में तेजी लाएं

महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं। जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं। इसलिए, यह इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम “महिलाओं में निवेश: प्रगति में तेजी लाएं” है।

भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है। आनंदीबाई गोपालराव जोशी (1865-1887) पहली भारतीय महिला चिकित्सक थीं और संयुक्त राज्य अमेरिका में पश्चिमी चिकित्सा में दो साल की डिग्री के साथ स्नातक होने वाली पहली महिला चिकित्सक रही हैं। सरोजिनी नायडू ने साहित्य जगत में अपनी छाप छोड़ी। हरियाणा की संतोष यादव ने दो बार माउंट एवरेस्ट फतेह किया। बॉक्सर एमसी मैरी कॉम एक जाना-पहचाना नाम है। हाल के वर्षों में, हमने कई महिलाओं को भारत में शीर्ष पदों पर और बड़े संस्थानों का प्रबंधन करते हुए भी देखा है – अरुंधति भट्टाचार्य, एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष, अलका मित्तल, ओएनजीसी की पहली महिला सीएमडी, सोमा मंडल, सेल अध्यक्ष, कुछ ओर नामचीन महिलाएं हैं, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

केंद्र सरकार ने देश में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए स्टैंड-अप इंडिया, और स्टार्ट-अप सम्बन्धि कई योजनाएं शुरू की हैं। अब एक महिला उद्यमिता मंच पोर्टल का गठन करना एक प्रमुख पहल है, जो नीति आयोग की एक प्रमुख पहल है। यह अपनी तरह का पहला एकीकृत पोर्टल है जो विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि की महिलाओं को एक पटल देता है और उन्हें कई प्रकार के संसाधनों, की सुविधा प्रदान करता है।

महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्रों में पांव रखने के लिए महिला स्टार्ट-अप महत्वपूर्ण है। अब महिलाओं ने पूरी उर्जा के साथ उद्यमिता के क्षेत्रों में पांव जमाए हैं। बैन एंड कंपनी और गूगल के अनुसार, महिला उद्यमी 2030 तक लगभग 150-170 मिलियन नौकरियां पैदा करेंगी। एक आधिकारिक अनुमान के अनुसार, 2018-21 तक स्टार्टअप्स द्वारा लगभग 5.9 लाख नौकरियां पैदा की गईं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से शुरू से ही उद्यमिता के बीज बोने का सार्थक प्रयास किया जा चुका है।

स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से महिलाएं न केवल खुद को सशक्त बना रही हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूती में को भी योगदान दे रही हैं। सरकार के निरन्तर लगातार आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उनकी भागीदारी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। पिछले 6-7 वर्षों में महिला स्वयं सहायता समूहों का अभियान और तेज हुआ है। आज देश भर में 70 लाख स्वयं सहायता समूह हैं। महिलाओं के पराक्रम को समझने की जरूरत है, जो हमें महिमा की अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी। आइए हम उन्हें आगे बढ़ने और फलने-फूलने में मदद करें। महिलाओं के सर्वांगीण सशक्तिकरण के लिए 'अमृत काल' इन्हें समर्पित हो!

>>>>>>>>>*****<<<<<<<<<<